आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2421 • उदयपुर, मंगलवार 10 अगस्त, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

सेवातीर्थ में नि:शुल्क दंत चिकित्सा शिविर सम्पन्न

नारायण सेवा संस्थान में निराश्रित, मूक–बधिर और प्रज्ञा चक्षु बच्चों के लिए शनिवार की सेवा महातीर्थ बड़ी परिसर में नि:शुल्क दंत चिकित्सा शिविर आयोजित हुआ। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि गीतांजलि डेंटल हॉस्पिटल के सहयोग से दंत चिकित्सा कैम्प हुआ। जिसमें 135 बच्चों को परामर्श देते हुए। चिकित्सा हुई शिविर में डॉ. पद्मकांत जी मनावा, डॉ. शारदा जी बिश्नोई सहित 12 सदस्यीय टीम ने सेवा दी। शिविर संयोजन बड़ी परिसर प्रभारी अनिल जी आचार्य थे। धन्यवाद ज्ञापन राकेश जी शर्मा ने किया। शिविर व्यवस्था में विष्णु जी क्षितिज, ईडर सिंह जी, शारदा जी, आयुष जी, मनीष जी, जितेन्द्र जी ने भी सेवाएं दी।

नारायण गरीब परिवार राशन योजना तहत् अहमदाबाद में जरुरतमंदों को राशन वितरण

नारायण सेवा संस्थान की ओर से गत रविवार को आयोजित कार्यक्रम में शहर के इसनपुर क्षेत्र में 76 जरूरतमंदों को राशन किट वितरित किये गये। संस्था के पदाधिकारियों के अनुसार लॉकडाउन के बाद नारायण सेवा संस्थान ने गरीब, बुजुर्ग और वंचितों को 29,798 राशन किट, 94,502 मास्क वितरण और मेडिसिन किट वितरित किये हैं।

संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल के अनुसार जिन्होंने महामारी में कमाई का स्रोत खो दिया है, उनकी मदद के लिए सभी आवश्यक राशन सामग्री उपलब्ध कराई जा रही है। राशन किट वितरण के दौरान 'मास्क है जरूरी' व सोशल डिस्टेंसिंग का सख्ती से पालन करने की अपील की जा रही है। शहर के अलग–अलग इलाकों में जरूरतमंदों को सामग्री वितरित की गई।

कैंसर पीड़ित मासूम राधिका को आर्थिक मदद

बांसवाड़ा जिले के टामटिया गांव की बालिका के कैन्सर रोग के उपचार के लिए नारायण सेवा संस्थान ने आर्थिक सम्बल प्रदान किया है। अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने बताया कि आदिवासी श्रमिक धन्ना जी कटारा की 6 साल की बेटी राधिका यहां गीताजंली हॉस्पीटल में भर्ती है। दिन–ब–दिन गिरते स्वास्थ्य के चलते जांच पर कैन्सर होना पाया गया। संस्थान निदेशक वंदना जी अग्रवाल हॉस्पीटल गई और आर्थिक सहयोग देते हुए उपचार होने तक राशन, भोजन, एम्बुलेंस व वस्त्रादि की व्यवस्था का भी भरोसा दिलाया।

नारायण सेवा में कम्प्यूटर प्रशिक्षण बैच का समापन

नारायण सेवा संस्थान में दिव्यांगों को रोजगार उपलब्ध कराई जाने की दृष्टि से संचालित नि:शुल्क रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षणों में कम्प्यूटर शिक्षण के 32वें बैच का समापन हुआ।

संस्थापक पद्मश्री कैलाश जी 'मानव' ने प्रशिक्षणार्थियों से कहा कि जीवन में निराशा को कभी ना आने दें, क्योंकि यदि कोई एक द्वार बंद होता है तो प्रभु दूसरे सौ द्वार खोल देता है।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि अब तक कम्प्यूटर प्रशिक्षण से 850 दिव्यांग लाभान्वित हो चुके हैं। समापन समारोह में निदेशक वंदना जी अग्रवाल ने बच्चों को शुभकामनाएं देते हुए कम्प्यूटर प्रशिक्षण प्रमाणपत्र भी वितरित किए। इस अवसर पर कम्प्यूटर प्रशिक्षक पंकज जी जीनगर ने प्रशिक्षण प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

हादसे में घायल को कृत्रिम पैर लगाया

नरेश बस की प्रतीक्षा में अपने गांव पुर की सड़क के किनारे खड़ा था कि सामने से तेज रफ्तार में आते हुए ट्रक ने उसे चपेट में ले लिया, जिससे दायां पांव बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। अस्पताल में घुटनों तक पाँव काटने के अलावा डॉक्टर्स के पास अन्य कोई विकल्प भी नहीं था। नरेश ने बताया कि वह गरीब परिवार का बी.ए. का छात्र है।

कृत्रिम पांव लगवाना भी उसके सामर्थ्य से बाहर था। कुछ ही माह पूर्व उसे नेट पर नारायण सेवा के बारे में जानकारी मिली, और यहां आने पर भीलवाड़ा जिले के तसोरिया गांव के नरेश खटीक (23) को नारायण सेवा संस्थान में कृत्रिम मोड्यूलर पैर नि:शुल्क लगाया।

राहत मिली आशु को

कालका, पिंजौर, हरियाणा के देवेन्द्र जी का पुत्र आशु 7 वर्ष की उम्र का जन्म से ही दिव्यांग था। आशु को शहर के कई अस्पतालों में दिखाया, लेकिन कहीं पर भी इलाज नहीं हो पाया। टी.वी. पर नारायण सेवा संस्थान की जानकारी पाकर मैं आशु को लेकर उसकी मां नारायण सेवा संस्थान में पहुँची। जांच के पश्चात् आशु के पांव का ऑपरेशन हुआ। ऑपरेशन के बाद वह अब पांव में पूर्व की अपेक्षा अधिक राहत महसूस करने लगा।

मेरे नारायण यहीं है

नाम– रेशमा देवगोंडा पाटील, गांव –कबनूर, जिला– कोल्हापुर (महाराष्ट्र), मैं जन्म से अपंग नहीं हूँ। एक दिन बुखार आया। इंजेक्शन लगाने के बाद मैं अपंग हो गयी। दौड़ना और सीधा चलना मेरे लिए एक ख्वाब था। हमें आपकी संस्थान के बारे में इचलकरंजी के महेश सेवा क्लब के माध्यम से जानकारी प्राप्त हो गयी।

महेश सेवा क्लब के माध्यम से हम नारायण सेवा संस्थान में दाखिल हुए। मेरा ऑपरेशन हुआ। ऑपरेशन के बाद अब मैं बहुत अच्छा महसूस कर रही हूँ। मेरे लिए दो पैरों पर सीधी तरह खड़े रहना एक ख्वाब था और वो खूबसूरत ख्वाब सिर्फ और सिर्फ आपके संस्थान ने पूरा किया, इसलिए मैं नारायण सेवा संस्थान की आजन्म आभारी रहूंगी। अब मैं सीधी तरह चल सकती हूँ। कैलीपर छूट गया है बैसाखी का इस्तेमाल एक दो बार करती हूँ। हर रोज लगभग 4 कि.मी. साइकिल चलाती हूँ। मैं अभी तृतीय वर्ष बी.कॉम में पढ़ती हूँ। नारायण सेवा संस्थान के सभी लोग बहुत अच्छे है। वहां पर जो हमने दिन बिताये हैं वो हमारे जीवन के सब से यादगार दिन थे, वो हम कभी भुला न सकेंगे। सचमुच मेरे लिए भगवान नारायण आप ही हैं।

सेवा में भगवान

नाम– धर्मवीर, आयु – 25 वर्ष, पिता– श्री हरचन्दजी, पता– भरतपुर, 5 वर्ष की आयु में पोलियोग्रस्त होने से धर्मवीर विगत 20 वर्षों से घुटनों पर हाथ के सहारे बड़ी मुश्किल से थोड़ा–बहुत चल–फिर पाता था। पड़ोसी से नारायण सेवा संस्थान की जानकारी मिली और उदयपुर आये। मेरे 2 ऑपरेशन हुए। अब मैं पैरों में स्फूर्ति अनुभव कर रहा हूँ और कैलीपर्स की सहायता से चलना संभव हो गया हैं। संस्थान ने मुझे नया जीवन दिया है। यहां निःशक्तजनों की निःशुल्क सेवा देखकर ऐसा लगता है कि भगवान स्वयं यहां विद्यमान है।

उमेश की दो साल से रुकी जिन्दगी शुरु

चोरी–चोरा, गोरखपुर (यू.पी.) निवासी 27 वर्षीय उमेश कुमार राजभर करीब 2 साल पहले एक रेल दुर्घटना के शिकार हो गए। दुर्घटना का जिक्र करते हुए वे रूंधे गले से बताते हैं कि मां–पिता की मौत तो मेरे लड़कपन में हो गई थी। खैर, ईश्वर की मर्जी के आगे किसी की नहीं चलती। भाभी और भाई ने मुझे बड़ा कर किया। परिवार की मदद के लिए लोहे के कारखाने में मजदूरी करने लगा। घरवालों से मिलने के लिए गांव जा रहा था कि चलती ट्रेन में चढ़ते वक्त गिर पड़ा। मुझे तो कुछ सुध नहीं रही बांया पांव पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था। किसी ने मुझे हॉस्पीटल पहुंचाया। वहां करीब 1 माह तक इलाज चला जिसके दौरान घुटने के नीचे से पांव काटना पड़ा। कल तक दौड़ रही जिन्दगी एकाएक थम गई। बेड पर बैठे रहने के सिवा कुछ भी नहीं कर सकता। कुछ दिन पहले किसी परिचित ने नारायण सेवा संस्थान की जानकारी दी तो मैं उदयपुर पहुंचा। संस्थान की प्रोस्थेटिक टीम ने कटे पांव का मेजरमेंट लिया और कृत्रिम पांव लगा दिया। अब मैं अपने पांवों पर चलने लगा हूं। मैं इतना खुश हूं कि कह नहीं पा रहा .... बस इतना ही कहूंगा कि मेरी जिन्दगी रूक गई थी जिसे फिर से शुरू करने वाली नारायण सेवा संस्थान और इनके डॉक्टर्स व टीम को बहुत धन्यवाद... आपने कृत्रिम अंग का मुझे उपहार दिया है ... मैं इसके लिए बहुत आभारी रहूंगा....

राहुल को लगे कृत्रिम पैर

शाहदरा– दिल्ली निवासी एवं संस्थान के विशिष्ट सेवा प्रेरक श्री रविशंकर जी अरोडा ने लॉक डाउन (कोरोना काल) के दौरान दोनों पांवों से दिव्यांग एक युवक के कृत्रिम पैर लगवाए।

दिल्ली के बदरापुर निवासी युवा क्रिकेट खिलाड़ी 2018 में जबलपुर मैच खेलने गए थे। लौटते समय चलती ट्रेन से नीचे गिर पड़े और पांव पहियों के नीचे आकर कट गए थे। कृत्रिम पांव लगने पर राहुल को अब चलने फिरने में किसी सहारे की जरूरत नहीं है। उन्होंने संस्थान एवं व उसके विशिष्ट सेवा प्रेरक–अरोडा जी का आभार व्यक्त किया है।

मिटी वेदना, लौटी मुसकान

देवऋषि रावत की चार साल की बिटिया वैष्णवी ने जुलाई 2017 में स्कूल जाना प्रारम्भ किया। खिलखिलाती मुस्कान और तुतलाती इसकी मीठी बोली ने कुछ ही दिनों में उसे सहपाठियों और शिक्षकों की लाड़ली बना दिया। मध्यप्रदेश के ग्वालियर जिले के डबरा निवासी माता–पिता की आंखों का तारा वैष्णवी छोटी उम्र में ही बड़े सपने देखने लगी थी, वह प्रायः कहती कि पढ़–लिखकर चाहें किसी क्षेत्र में जाए, दीन–दुखियों की सेवा को अपना पहला फर्ज बनाएगी लेकिन विधना को उसके बडे सपने शायद रास नहीं आए। एक दुर्घटना ने उसके सपनों के पंख काट दिए। स्कूली जीवन का एक महिना भी पूरा नहीं हुआ था कि 20 जुलाई 2017 को छुट्टी के बाद स्कूल द्वार से बाहर बजरी से लदे अनियंत्रित ट्रेक्टर ने उसे चपेट में ले लिया। बांया पांव बुरी तरह कुचल गया। घटना का पता चलते ही जब पिता हॉस्पीटल पहुंचे, छटपटाती मासूम को देख बेहोश हो गए। लोगों ने पिता–पुत्री को अस्पताल पहुंचाया। वैष्णवी पैर खोकर एक माह बाद घर लौटी। कटे पांव को देख रोती रहती, सोचती कैसे कटेगी आगे की जिंदगी । स्कूल भी छूट गया, सपने भी टूट गए। मां– बाप भी दुःखी थे। कुछ दिनों बाद उम्मीद की किरण बन एक महिला देवऋषि के घर आई। जिसने नारायण सेवा संस्थान में निःशुल्क कृत्रिम अंग लगाए थे बिना देरी किये वैष्णवी को माता–पिता उदयपुर लेकर आए। यहां डॉ. मानस रंजन जी साहू ने उसके लिए विशेष कृत्रिम पांव बनाया, उसे लगाने–खोलने और पहनकर चलने की कई दिनों तक ट्रेनिंग दी। वैष्णवी जब उस कृत्रिम पांव को पहनकर चलने लगी तो उसके होठों पर अमिट मुस्कान थी। माता–पिता भी खुश थे। उन्होंने संस्थान का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वैष्णवी अब अपने सपने जरूर सच करेगी।

सम्पादकीय

प्रकाश पराधीनता से मुक्ति का सहज उपाय है। प्रकाश को अनुभवियों ने अनेक अर्थों में उपयोग किया है। लेकिन प्रकाश का एक ही संदर्भ है और वह है सकारात्मकता।

चाहे अंधकार को विलीन करता प्रकाश हो, अज्ञान को लीलता ज्ञान का प्रकाश हो, चाहे अनीति पर विजय प्राप्त करता नीति का प्रकाश हो, सब सकारात्मक ही है। प्रकाश उस माध्यम का प्रतीक है जिसकी उपस्थिति में नकारात्मकता, अंधकार और अज्ञान भाग खड़े होते हैं। प्रकाश के आते ही अनपेक्षित तत्व स्वयं विदा हो जाते हैं। हमें अंधकार से लड़ना नहीं वरन् प्रकाश का आह्वान करना है। प्रकाश की स्तुति सदा से होती रही है चाहे वह सूर्य की हो, अग्नि की हो या दीपक की। सारी सृष्टि का अस्तित्व प्रकाश के किसी न किसी रूप पर ही आश्रित है तो मनुष्य तो उस सृष्टि का एक बिन्दुमात्र है। उसे भी तो प्रकाश की परम आवश्यकता है। प्रकाश बाहरी भी अच्छा है तो भीतरी प्रकाश प्रकट हो जाये तो क्या बात है।

कुछ काव्यमय

है प्रकाश यदि बोध का,
तमस कहाँ टिक पाय।
सूरज उगता ज्ञान का,
नासमझी भग जाय।।
करें उजाला प्रेम का,
घृणा नष्ट हो जाय।
सुखमय यह संसार हो,
प्रीत यहाँ सरसाय।।
होय प्रकाशित हृदय तो,
बहे प्रेम रसधार।
कौन पराया फिर यहाँ,
अपना सब संसार।।
मन यदि रोशन हो सके,
मिटते राग विराग।
नजर उजाला ही रहे,
छुप जाये सब दाग।।
बाँट उजाला जगत में,
यह परमात्म प्रसाद।
भाईचारा बढ़ चले,
मिट कर सभी फसाद।।

- वरदीचन्द राव

कोविड-19 के नियम

- भीड़-भाड़ वाली जगहों पर जाने से बचें।
- सार्वजनिक स्थानों पर ना थूकें।
- बार-बार अपने हाथों को धोएं।
- बाहर जाते समय मास्क जरुर लगाऐ।
- अपनी आंख, नाक या मुंह को न छुएं।
- जुकाम और खांसी होने पर मास्क पहनें।
- छींकते समय नाक और मुंह को ढकें।

अपनों से अपनी बात

परोपकार, पवित्रता, करुणा

पढ़ने में आया था– महाराणा रणजीत सिंह जी एक बार अपने साथियों के साथ जब कहीं भ्रमण पर जा रहे थे, कि अचानक एक ढेला उनके कन्धे पर आकर लगा। तुरंत सैनिक दौड़ पड़े, और एक बुढ़िया को पकड़ लाये जो दंड की आशंका से थर–थर काँप रही थी। रोती हुई सी हाथ जोड़े उस मांई ने बताया –महाराज जी! मैंने तो आम तोड़ने के लिए वृक्ष पर पत्थर मारा था। गजब हो गया–आपके लग गया। अब जो भी दंड.....।

दयालु महाराज ने राज्य कोष से उसके घर पर जीवन यापन का सामान भिजवाया। आश्चर्यचकित से हुए अपने दरबारियों को कहा –"देखो भाई ! जब एक वृक्ष भी ढ़ेला मरने पर अपने प्राणतत्त्व युक्त मीठा फल प्रदान कर देता है, तो फिर मैं तो मानव हूँ.....

और फिर उस बेचारी मांई ने जानबूझ कर तो नहीं मारा था न ?"

है नहीं मुमकिन कि जीते,
शक्ति से एक व्यक्ति भी।
प्यार के दो बोल बोलो,
चाहो तो दुनियां जीत लो।।

बहुत सरल है प्यार बढ़ाना –घृणा बढ़ाना अवश्य कठिन है। क्योंकि वह मानव के स्वाभाविक गुण के विपरीत है, और फिर हमारे इस प्रिय भारत देश में तो पूरी थाती है प्रेम, त्याग, सेवा, परोपकार, दयालुता व उदारता आदि की।

हजारों महापुरुषों के जीवन्त उदाहरण हैं जिन्होंने इन्हीं गुणों से पूरे विश्व को अमर धरोहरें प्रदान की है– तिल–तिल जल कर... क्षण–क्षण जी कर।

क्या सुन्दर कहा एक कवि ने :–

ईश्वर को नापसंद है,
शक्ति जुबान में।
इसलिए तो नहीं दी है,
हड्डी जुबान में।।

आइए बन्धुओं मजबूत करें नारायण सेवा को अर्थात परोपकार के रचनात्मक कार्यों को।

ताकत दें सेवा के मन को अर्थात सात्विक विचारों के प्रसार को, और दुंदुभी बजा दें– प्यार की पवित्रता की करुणा व स्नेह की।

–कैलाश 'मानव'

अमूल्य है प्रशंसा

हमारे भीतर अगर धन्यवाद का भाव आ जाए तो जीवन सुखमय हो जाएगा। हर अच्छाई की प्रशंसा करके लोगों के दिलों को जीता जा सकता है। एक परिवार में पति– पत्नी और बच्चा बडे प्यार से रहते थे। पति और पत्नी दोनों जॉब करते थे। गृहस्थी आराम से चल रही थी। एक दिन की बात है कि पत्नी थकी–मांदी ऑफिस से लौटी, उसने जैसे–तैसे भोजन बनाया और रख दिया। देर शाम पति घर लौटा। उसने उस भोजन को प्रेम से खा लिया, परन्तु उसके बेटे को भोजन नहीं भाया।

बेटे ने रात को सोते समय पिता से पूछा पापा ! आज भोजन कच्चा था, फिर भी आपने खा लिया। मम्मी को

कुछ नहीं बोला तब पिता ने प्यार से बेटे के सिर पर हाथ फिराते हुए कहा– आपकी मम्मी रोजाना अच्छा भोजन बनाती है, आज उनकी तबीयत ठीक नहीं थी।

इसीलिए अच्छा भोजन नहीं बना पाई, कोई बात मैंने कुछ नहीं कहकर घर में अशांति को रोक लिया। बेटा पिता से एक अच्छी बात सीख गया। लेकिन दूसरी कहानी में एक पत्नी ने पति की थाली में घास–फूंस, कंकर –पत्थर ढककर परोस दिया। पति ने भोजन के लिए ऊपर की थाली हटाई तो घासं–फूंस देखकर आग– बबुला हो गया और जोर–जोर से कहने लगा कि मुझे तुमने जानवर समझा है क्या? पत्नी पलटकर जवाब देती है–पतिदेव ! आज शादी को 5 वर्ष हो गए मैंने अच्छे–अच्छे व्यंजन बनाकर आपको परोसे, परन्तु आपने कभी भी अच्छा या बुरा, कुछ भी नहीं कहा।

मुझे लगा कि आप जानवर ही है जो अच्छे को अच्छा कहना नहीं जानते। यह सुनकर पति ने सीख ली कि मुझे उसकी अच्छाई भी बताना चाहिए थी, ताकि वह हमेशा खुश रहती ।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

कैलाश की बात सुन कर सोनी ने कहा कि परीक्षा में कुल 7 पेपर होते हैं, अभी 6 पेपर दे दो, सातवां पेपर कभी भी दे सकते हो। 6 पेपर पास कर दो साल तक आई.पी.ओ. के मजे लेते रहो, दो साल बाद सातवां पेपर दे देना और जे.ए.ओ. बन जाना। सोनी की यह बात कैलाश को जंच गई, वैसे भी वह खाली ही था। परीक्षा अगले माह ही थी।

अब दोनों मिलकर परीक्षा की तैयारी करने लगे। सातवें पेपर की किताबें भी उनके पास ही थी मगर वे इसे छूते भी नहीं थे। कैलाश पूरी कोशिश करता था कि सातवें पेपर की किताबों की तरफ देखे भी नहीं, उसने तो सोनी को यहां तक कह दिया था कि इन किताबों को यहां से हटा दो। ऐसे संकल्प के बावजूद जब सभी छह पेपरों की पढ़ाई पूरी हो जाती तो सातवें पेपर की किताबें उसे ललचाती। वह जी कड़ा कर उनकी तरफ से ध्यान हटाने की कोशिश करता मगर फिसल ही जाता और ये किताबें उठा कर उलटने–पलटने, इस प्रक्रिया में कब वह ये किताबें पढ़ने लगता उसे पता ही नहीं चलता।

दोनों ने 6 पेपर खुशी खुशी दे दिये। सातवें पेपर की भी परीक्षा होने वाली थी, कैलाश को अब लगने लगा कि सातवें पेपर की परीक्षा देने में भी हानि क्या है, तैयारी है नहीं, फेल तो होना ही है, दो साल बाद वापस दे देंगे। ऐसे विचारों के बावजूद वह अपना मन कड़ा कर रहा था कि परीक्षा नहीं दे मगर जैसे कोई अदृश्य शक्ति उसे खींच कर ले जा रही थी, वह परीक्षा देने पहुंच गया। पेपर आया, दस मिनट तक तो उसने अपना पेन ही नहीं खोला, फिर धीरे धीरे कुछ लिखने लगा।

पेपर 100 अंकों का था, उत्तीर्ण होने के लिये न्यूनतम 40 अंक लाना अनिवार्य था। उसने 30 अंकों के ही प्रश्नों के उत्तर दिये ताकि यह निश्चित हो जाये कि वह उत्तीर्ण नहीं हो, पौन घन्टे में ही वह अपनी कॉपी दे कर परीक्षा भवन से बाहर आ गया। वह प्रसन्न था, पेपर सरल ही था, उसने पूरे उत्तर नहीं दिये थे इसलिये पास होने का सवाल ही नहीं था। इसी बहाने आई.पी.ओ. की नौकरी 2–3 साल और चल जायगी।

अंश - 82

दाद की बीमारी से रहिये सावधान

दाद के लक्षण –

जब शरीर पर लाल रंग के धब्बे, खुजलाहट या फिर सूजन दिखे तो उसको जल्द से जल्द डॉक्टर को दिखा लेना चाहिये, क्योंकि यह रिंगवर्म के संकेत हो सकते हैं। कई बार यह दाग गोल आकार का होता है, जिससे आसानी से समझ में आ जाता है।

अक्सर दाद छोटे बच्चों को होता है, इसलिये अगर उसके शरीर पर कोई लाल रंग का दाग–धब्बा दिख रहा हो तो तुरंत डॉक्टर के पास उसे लेकर जाएं।

जॉक खुजली एक तरह का दाद है, जो कि त्वचा की परतों में होता है।

अगर यह रोग हाथ पर होता है तो हाथ पूरी तरह से फूल जाता है, त्वचा पर तेज खुजली होती है और उस पर परत बन जाती है।

बीमारी का उपाय –

टीवी पर दाद के अनेक प्रचार आते हैं, लेकिन कभी भी ऐसे ही कोई क्रीम या दवा नहीं खरीदनी चाहिये। इसके लिये हमेशा केमिस्ट या डॉक्टर की सलाह लेनी चाहिये।

दाद के पीड़ित रोगी को इस रोग का उपचार करने के लिए सबसे पहले दाद वाले भाग पर थोड़ी देर गर्म तथा थोड़ी देर ठंडी सिंकाई करके, उस पर गीली मिट्टी का लेप करना चाहिए। इससे दाद ठीक हो जाता है।

रोगी व्यक्ति को नीबू का रस पानी में मिलाकर प्रतिदिन कम से कम 5 बार पीना चाहिए और सादा भोजन करना चाहिए।

संक्रमित त्वचा को हमेशा साफ रखें और ऐसी कोई चीज न पहनें, जिससे त्वचा को परेशानी हो।

बेड शीट, कपड़े रोज प्रयोग किये जाने वाले सामानों को साफ रखें।

घर में अगर पालतू जानवर है, तो उनसे दूर रहें, क्योंकि यह अपने शरीर पर फंगस लेकर घूमते रहते हैं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

सिरोही में जो मकान किराया में मिला। जैन माताजी का काफी बड़ा मकान था, पुरानी हेवली टाईप। दोनों तरफ बैठने के चबूतरे, अन्दर जाने के बाद में बड़ा सा दरवाजा, माताजी बाहर वाले दो–तीन कमरों में रहती थी, मकान मालकिन। और अन्दर एक छोटा सा चौक सामने बड़ा कमरा, दो साईड में। बस पास से ही पैदल–पैदल ऑफिस आ जाते।

पोस्ट आफिस के सामने ही हॉस्पीटल, सड़क के इस तरफ हॉस्पीटल। पोस्ट आफिस में अभी जब दृश्य घूमता है। पीछे की साईड में चौक था। कंकर, पत्थर, कांटे लंबा सा चौक था, कच्ची जमीन थी। पीछे का दरवाजा ऐसे खुलता था। वो भी पोस्ट ऑफिस का एक पार्ट था।

पोस्ट ऑफिस की पुरानी बिल्डिंग थी उसी में था। मैंने एक दिन पोस्ट मास्टर साहब को कहा– मास्टर साहब यहाँ बगीचा कर दें तो कैसा रहेगा? वो हंसने लगे,बगीचा कैसा?

यहाँ तो झाड़–झंखाड़ है, ईंट– पत्थर। मैंने कहा– श्रमदान करेंगे आपकी हाँ होनी चाहिये। हाँ हाँ अच्छी बात है बगीचा, फूल खिल जाये तो और क्या चाहिये? फावड़ा– गेंती मंगाई– महाराज। जब कन्सारा जी, राजपुरोहित जी, हां हमारे पूरणमलजी शर्मा साहब अभी जयपुर बिराजते हैं।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 209 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023